द्रोणपर्व कथासार

द्रोणपर्व में ८ उपपर्व, २०२ अध्याय, ९७४८ श्लोक हैं।

पितामह भीष्म के धराशायी होने का समाचार सुनकर धृतराष्ट्र अत्यन्त व्याकुल हो गये। उन्हें अत्यन्त शोकाकुल देख सञ्जय ने उन्हें बहुत समझाया। भीष्म के पश्चात् दुर्योधन ने अपने कर्णादि महारथियों की मंत्रण से गुरु द्रोणाचार्य को विधिवत् सेनापति पद पर अभिषिक्त किया। गुरु द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को प्रसन्न करने के लिए सिंहनाद किया और कहा कि हे कुरुनन्दन! तुम्हारी जो भी इच्छा हो वह वर मुझ से मांग लो। तब दुर्योधन ने कहा कि मुझे वर स्वरूप युधिष्ठिर को पकडकर ले आना उसे पुनः द्यूत में जीत लूँगा और फिर भाइयों सहित उसे वन में भेजकर निष्कंटक राज्य करूँगा। दुर्योधन के इस निकृष्ट विचार को सुनकर द्रोणाचार्य खिन्न मन से बोले - हे राजन्! मैं धर्माराज युधिष्ठिर को एक अनुबन्ध (शर्त) पर पकड सकता हूँ। वह यह कि उन की रक्षा हेतु अर्जुन युद्ध भूमि में न हों, अथवा वे युद्ध से पलायन न करें, क्यों कि अर्जुन द्वारा रक्षित होने पर मैं क्या, इन्द्र भी उन्हें (युधिष्ठर को) नहीं पकड सकते।

इसके पश्चात् गुरु द्रोणचार्य ने युद्ध के ग्यारहवें दिन "शकट व्यूह" की रचना की और पाण्डवों ने क्रौञ्च व्यूह का निर्माण किया। ये दोनों ही व्यूह अत्यन्त विस्तार से बताये गये। पाण्डव सेना के मुख्य द्वार पर भगवान श्रीकृष्ण के साथ अर्जुन विराजमान थे। दोनों ही विपक्षी दल परस्पर (एक दूसरेको) क्रोधपूर्ण दृष्टि से देख रहे थे। उधर द्रोणाचार्य द्वारा युधिष्ठिर को रणभूमि में पकडने की प्रतिज्ञा गुप्तचरों द्वारा युधिष्ठिर को विदित हो गई, इसकी जानकारी तत्काल ही अर्जुन को दी। यह सुनकर अर्जुन ने कहा कि आप चिंतित न हों जब तक मेरे हाथों में गाण्डीव है तब तक गुरु द्रोण क्या यदि भगवान शिव भी आ जायें तो आप को छू नहीं सकते। आप निश्चिंत व निर्भय होकर युद्ध करें। अर्जुन के इस कथन से सन्तुष्ट होकर धर्मराज युधिष्ठिर निर्भय होकर रणभूमि में विचरण करने लगे। तत्पश्चात् दोनों दलों में घोर संग्राम होने लगा। सेनापति द्रोणाचार्य के तीखे बाण पाण्डवों की सेना का विनाश करने लगे। उधर अर्जुन के बाणों से कौरवों की सेना भी क्षतविक्षत होने लगी। शल्य और भीमसेन का युद्ध अभूतपूर्व था। भीम ने अपनी गदा से शल्य के सारथि को मारकर उन्हें भारी क्षति पहुँचायी। उसके पश्चात् शल्य युद्धभूमि में टिक न सके तत्काल ही पलायन कर गये। यह देखकर कौरवों की सेना में हाहाकार मच गया उसके पश्चात् सूर्यास्त होने पर युद्ध विराम हो गया।

उस दिन कौरव तो बुरी तरह पराजित हुए किन्तु युधिष्ठिर भी पकडे जाने से बार-बार बचे। यह देखकर दुर्योधन दौडकर द्रोणाचार्य समीप आया और बोला हे गुरुवर! युधिष्ठिर पकडे जाने बच गये आपने उन्हें क्यों छोड दिया? द्रोणाचार्य खिन्न मन से बोले दुर्योधन! यह तो मैं ने पहले ही कह दिया था कि अर्जुन के उन की रक्षा में रहते हुए मैं युधिष्ठिर को पकड नहीं पाऊँगा। यदि तुम इस युद्ध में अर्जुन को किसी प्रकार दूर कर सकोगे तो युधिष्ठिर को आसनी से पकड

MAHABHARATA
e-text

लूँगा। द्रोणाचार्य की यह बात सुनकर "त्रिगर्तराज सुशर्मा" ने। अर्जुन को युद्धभूमि से बहुत दूर ले जाने का निश्चय किया। उसने ने अर्जुन को युद्ध हेतु ललकारना आरम्भ कर दिया। अर्जुन को यह ललकार सहन न हो सकी वह अकेले ही श्रीकृष्ण जी को साथ लेकर उन से युद्ध करने को तैयार हो गये। यह देखकर युधिष्ठर ने अर्जुन से कहा हे
भ्राता! तुम त्रिगर्तों से युद्ध करने के लिए जा रहे हो, यहाँ द्रोणाचार्य से मेरी रक्षा कौन करेगा। यह बात सुनकर अर्जुन ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा हे राजन् जब तक सत्यजित के शरीर में प्राण रहेगा तब तक द्रोणाचार्य आप का कुछ नहीं कर सकेंगे, किन्तु यदि इस वीर की मृत्यु होती है तो आप तत्क्षण ही युद्ध से विरत होकर चले जायें। युधिष्ठिर को इस तरह समझाने के पश्चात् रथारूढ होकर त्रिगर्तों के सम्मुख आ गये और अपने अभूतपूर्व पराक्रम से त्रिगर्तों का विनाश कर उन्हें यमलोक भेज दिया।

इसके पश्चात् अर्जुने ने अपना रथ 'भगदत्त' की ओर घुमाया किन्तु उसी बीच द्रोणाचार्य ने विराट के छोटे भाई शतानीक, सत्यजित आदि वीरों का वध कर दिया। अब सत्यजित् का वध होते ही युधिष्ठिर युद्ध मैदान से विरत हो गये। इधर जब घटोत्कच ने पाण्डव सेना की दुर्दशा देखी तो वह द्रोणाचार्य के सम्मुख आ गया। इस पर द्रोणाचार्य ने उस से युद्ध करने के लिए अलम्बुष को बुलाया। उन दोनों मायावी राक्षसों का घनघोर युद्ध होने लगा। अब अर्जुन द्वारा भगदत्त पर आक्रमण करने पर भगदत्त ने अपने अमोघ वैष्णवास्त्र को अर्जुन के वक्षस्थल पर अपनी सम्पूर्ण शक्ति से प्रहार किया। इसे देखकर श्रीकृष्णभगवान ने आगे बढकर उसे अपने वक्षस्थल पर ले लिया। इससे अर्जुन को अत्यन्त कष्ट हुआ। कृष्ण ने युद्ध न करने की अपनी प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने भगदत्त के वध हेतु प्रेरणा दी एवं उनका मृत्यु रहस्य बताया। भगदत्त का वध होते ही कौरव सेना में पुनः हाहाकार उत्पन्न हो गया तब सूर्यास्त हो जाने से युद्ध विराम हो गया। लेकिन इधर शकुनि के भाइयों का भी नाश हो जाने से दुर्योधन को अत्यन्त कष्ट हुआ।

अपनी घोर पराजय को देखकर दुर्योधन को उस रात्रि निद्रा नहीं आयी और उसी क्षण दौडता हुआ गुरु द्रोणाचार्य के समीप पहुँचकर बोला कि ऐसा लगता है कि आप हम लोगों को अपना शत्रु ही समझते हैं अन्यथा आज भी युधिष्ठिर को नहीं छोडते थे। दुर्योधन के इस कठोर वचन को सुनकर द्रोणाचार्य अत्यन्त भिन्न होते हुए बोले - अच्छा कल किसी न किसी तरह युधिष्ठिर को पकड ही लूंगा अथवा उनके किसी एक वीर को नष्ट कर दूँगा। किन्तु शर्त यही है कि अर्जुन को फिर कहीं दूर ले जाकर युद्ध में फंसा दिया जाये। द्रोणाचार्य की यह बात सुनकर संशप्तकों ने अर्जुन को कहीं दूर ले जाकर युद्ध में उलझाने की प्रतिज्ञा की। फिर प्रातः काल होते ही द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की। उस व्यूह के चारों ओर सूर्य के समान तेजस्वी राजकुमारों को नियुक्त किया गया। उसके सात परकोटे व्यूह के अग्रभाग (प्रथमद्वार) में द्रोणाचार्य और जयद्रथ खडे

हुए। द्रोणाचार्य द्वारा निर्मित इस व्यूह को अर्जुन और श्रीकृष्ण के अतिरिक्त और कोई भेद नहीं सकता था। यह देखकर युधिष्ठिर बहुत ही चिन्तित हुए और अपनी सेना के वीरों से बोले-हे वीरों! इस समय अर्जुन संशप्तकों से युद्ध करने दूर चले गये हैं। अब द्रोणाचार्य द्वारा रचित इस चक्रव्यूह को तोडने की विधा श्रीकृष्ण और अर्जुन के अतिरिक्त किसी अन्य को नहीं ज्ञात है, इसीलिए मुझे चिन्ता हो रही है कि इस व्यूह को कैसे तोडा जाये?

यह सुनते ही अभिमन्यु ने शीघ्र ही आगे बढकर युधिष्ठिर को प्रणाम करते हुए कहा - इस व्यूह को तो मैं आसानी से तोड सकता हूँ किन्तु इसमें घुसकर मैं निकलना नहीं जानता

हूँ। जब मैं गर्भ में था, तब पिताश्री ने माता जी को चक्रव्यूह भेदने की विधी बतलाई थी। उसी को सुनकर मुझे चक्रव्यूह भेदने की विधि तो याद है लेकिने व्यूह से निकला कैसे जाता है इस विधि को मैं नहीं सुन सका क्योंकि उस समय तक माता जी को निद्रा आ चुकी थी और पिता श्री ने आगे और कुछ बताना बन्द कर दिया था। इसलिए आप किञ्चित् मात्र भी चिन्तित न हों क्यों कि व्यूह तो मैं घुसकर तोड ही दूँगा। यह सुनकर युधिष्ठिर ने कहा - पुत्र! व्यूह तोडना ही तो कठिन है फिर तो हमारे दल के सभी वीर जो तुम्हारे साथ रहेंगे, तुम्हें शीघ्र ही उसमें से सुरक्षित निकालकर वापस ले आयेंगें। यह सुनकर अभिमन्यु प्रसन्न हो उठा और अपने धनुष को टङ्कारता हुआ भीमसेन, धृष्टद्युम्न, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव आदि के साथ चक्रव्यूह भेदने के लिए चल पडा। अर्जुन का यह षोडशवर्षीय बालक सिंह के समान गर्जन करता हुआ द्रोणाचार्य के सम्मुख आ पहुँचा भीमसेन ने उससमय द्रोणाचार्य के साथ महा भयंकर युद्ध किया और उनके रथ को उठाकर दूर फेंक दिया। इससे अभिमन्यु का मार्ग निर्विघ्न हो गया और वह आगे बढने लगा किन्तु इसी बीच उसका मार्ग रोकने के किए जयद्रथ सम्मुख आ गया किन्तु अभिमन्यु के तीक्ष्ण बाणों से विह्वल होकर वह उसका मार्ग रोकने में असमर्थ हो गया, अब अभिमन्यु तो चक्रव्यूह में प्रवेश कर गया किन्तु भीमसेन आदि योद्धाओं को जयद्रथ ने अपने वरदान के प्रभाव से रोक दिया। भीमसेन ने वहाँ से निकलने का बहुत प्रयास किया किन्तु असफल रहें।

इधर युद्धक्षेत्र में अभिमन्यु ऐसा पराक्रम दिखला रहा था कि उसका मार्ग अवरुद्ध करने वाला कोई नहीं बचा। उसकी ऐसी वीरता को देख कौरव सेना त्राही त्राही करते पलायित होने लगी। उस समय उसे रोकने के लिए द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, बृद्धबल तथा कृपाचार्य आ पहुँचे। इन सभी महारथियों ने एक साथ मिलकर आभिमन्यु से युद्ध करना आरम्भ कर दिया। अभिमन्यु ने असंख्य शत्रुवीरों को यमलोक पहुँचा दिया। इससे समस्त महारथी कर्ण, द्रोण इत्यादि भी व्याकुल होकर भागने लगे। इसी समय अभिमन्यु के हाथों से कुमार लक्ष्मण की भी मृत्यु हो गयी। यह देख दुर्योधन महाक्रोध में आकर द्रोणाचार्य के समीप पहुँचा और अश्रु बहाता हुआ बोला - हे आचार्य! क्या आप नही देख रहे हैं कि एक किशोर ने हमारी सेना को नष्ट कर दिया है? इसी समय कर्ण भी घायल होकर

द्रोणाचार्य के पास पहुँचा और बोला - हे आचार्य! आज जैसी दुर्गति मेरी पहले कभी नहीं हुई। यदि आपने इस सिंहशावक को नहीं रोका तो आज ही समस्त कौरव सेना का विनाश हो जायेगा। द्रोणाचार्य यह सुनकर बोले - हे कर्ण! इसके पिता अर्जुन ने जो अमोघ कवच विद्या सीखी थी वह विद्या अभिमन्यु को प्रदान कर दी है। अब जब तक इसके हाथ में धनुष बाण है और बैठने का रथ है तब तक उसे तुम क्या त्रिलोक में भी कोई नहीं पराजित कर सकता है। इसीलिए सर्वप्रथम इसके धनुष को काटकर इसके रथ आदि को नष्ट कर दो, तभी निहत्था हो जाने पर यह बालक मारा जा सकता है। यह सुनते ही कर्ण एक बार पुनः साहस कर अभिमन्यु सम्मुख पहुँचा और उसके धनुष को काट दिया। फिर कृतवर्मा ने आगे बढकर उसके घोडों का मार गिराया फिर सात महारथी एक साथ मिलकर उस बालकःपर एक साथ बाणों की वर्षा करने लगे। लेकिन दुःसाहसी अभिमन्यु क्षत्रिय धर्म का पालन करता हुआ अकेले ही ढाल व तलवार लेकर युद्ध में कूद पडा
और इधर-उधर धूमधूमकर घोर संग्राम करने लगा। तब द्रोणाचार्य ने 'क्षुरप्र' नामक बाण से उसकी तलवार को टुकडें टुकडें कर दिये और कर्ण ने उसकी ढाल छिन्नाभिन्न कर दी। अन्त में उसने दुःशासन के पुत्र पर अपनी गदा से प्रहार किया तब उसने भी अभिमन्यु पर गदा से प्रहार किया इस गदा के प्रहार से दोनों वीर मुर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पडे लेकिन दुःशासन के पुत्र को चेतना पहले लौट आयी इसीलिए उसने मूर्च्छित पडे हुए अभिमन्यु पर तुरन्त गदा चला दी जिससे उस वीर बालक अभिमन्यु की मृत्यु हो गयी। अभिमन्यु की मृत्यु होते ही पाण्डव अत्यन्त विलाप करने लगे। तदनन्तर सायंकाल होने से दोनों ओर की सेनाएँ अपने अपने शिबिरों की ओर प्रस्थान कर गई।

सन्ध्याकाल अर्जुन संशप्तकों का वध करके श्रीकृष्ण से वार्ता करते हुए अपने शिबिर को वापस लौटे। अकस्मात् मार्ग में ही उनकी वाम बाहु और वामनेत्र फडक उठा। उसके साथ ही उन्हें कुछ अपशकुन भी दिखाई पडे। यह देखकर अर्जुन की व्याकुलता बढने लगी और वे बोले हे भगवान्! ऐसा ज्ञात होता है कि आज हमारे किसी वीर की मृत्यु अवश्य हुई होगी। ऐसा भी हो सकता है कि महाराज युधिष्ठिर ही पकड लिए गये हों। श्रीकृष्ण ने समझाया हे अर्जुन! चिन्ता मत करो जो होनी है वह होकर ही रहेगी, वैसे युधिष्ठिर सकुशल ही रहेंगे, क्योंकि उन्हे पकडने या मारनेवाला तीनों लोकों में नहीं है। हाँ, यह हो सकता है कि हमारी सेना के किसी वीर की ही मृत्यु हुई हो। उस प्रकार तेजी से रथ हांकते हुए श्रीकृष्ण अर्जुन को लेकर शिबिर आ पहुँचे लेकिन वहाँ मंगलवाद्य और दुन्दुभी न बजते हुए देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि अवश्य ही कोई अप्रिय घटना घट गयी है। अर्जुन शीघ्र ही रथ से उतरकर युधिष्ठिर के शिबिर में जा पहुँचे किन्तु वहाँ उन्होने सभी को शोकमग्न बैठे हुए देखा, उस समय सभी के नेत्र अश्रुपूरित थे। यह देखकर उन्होंने पूछा है? क्या कारण है कोई तो मुझे बताये लेकिन उस समय उनसे बात करने का साहस युधिष्ठिर के अतिरिक्त

किसी में नहीं था। तब युधिष्ठिर ने विलाप करते हुए कहा आज हमारे वही आँखों का तारा सुभद्रा का प्रियपुत्र अभिमन्यु हमें छोडकर चला गया। यह सुनते ही अर्जुन शोकग्रस्त हो विह्वल होकर मूर्छित हो उठे। फिर सभी लोग व्याकुल होकर रोने लगे। अब अर्जुन के चेतना आने पर श्रीकृष्ण ने समझाया कि हे पार्थ! तुम तो ज्ञानी हो? मैं ने तो तुम्हें पूर्ण तत्व ज्ञान एवं ब्रह्मज्ञान से परिचित कराया है फिर भी तुम इतने विह्वल क्यों हो रहे हो? हे अर्जुन! इसके लिए शोक तो कदापि नहीं करना चाहिए। इसमेंलिए दुःख केवल एक ही बात है कि वह अधर्मपूर्वक मारा गया है। अब उसका प्रतिशोध लेना ही तुम्हारा धर्म है।

युधिष्ठिर बोले - हे महाबाहो! तुम जब संशप्तकों से युद्ध करने चले गये थे उस समय द्रोणाचार्य ने मुझे पकडने के लिए चक्रव्यूह की रचना की उस चक्रव्यूह भेदन की कला को हम में में से कोई नही जानता था अत एव मेरी आज्ञा से अभिमन्यु उस व्यूह भेदन के लिए तैयार हो गया। तत्पश्चात् मैं, भीमसेन, नकुल, सहदेव अन्यवीर राजागण अभिमन्यु की रक्षा के लिए उसके साथ-साथ चले। अभिमन्यु तो अन्दर जा घुसा। किन्तु शंकरजी के वरदान के प्रभाव से जयद्रथ ने हमें द्वार पर ही रोक दिया। हम लोगों ने अपने पूर्ण शक्ति लगाकर अन्दर प्रवेश पाने का प्रयत्न किया किन्तु जयद्रथ ने सफलता न मिलने दी। तब अन्दर द्रोण, कर्ण, कृपाचार्य,
अश्वत्थामा कृतवर्मा, बृहद्बल तथा दुर्योधन ने मिलकर अभिमन्यु को चारों ओर से घेर लिए। अभिमन्यु ने उस समय भी अनेक वीरों का संहार किया। अन्त में दुःशासन के पुत्र ने मूर्छित पडे हुए अभिमन्यु को गदा से प्रहार किया जिससे वह वीर गति को प्राप्त हो गया। उसकी मृत्यु का मुख्य कारण जयद्रथ ही है। युधिष्ठिर की बात सुनकर अर्जुन ने प्रतिज्ञा की कि कल मैं सूर्यास्त के पूर्व ही उस पुत्रघाती को अवश्य मार डालूँगा अन्यथा ऐसा न करने पर स्वयं को अग्नि में जलकर प्राण त्याग दूँगा। जब इस भीषण प्रतिज्ञा का ज्ञान जयद्रथ को मालूम हुआ तो वह दुर्योधन के समीप आकर बोला - हे राजन्! आपने अर्जुन की भीषण प्रतिज्ञा तो सुनी ही होगी। आप को यह भी ज्ञात होगा कि एकबार मनुष्य काल के हाथों से अपने को बच सकता है किन्तु अर्जुन के बाण से नहीं बचा जा सकता है दुर्योधन ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा - हे वीर! आचार्य द्रोण के रहते तुम्हें इतना भयभीत होने की आववश्यकता नहीं है। इस प्रकार उद्बोधन कर दुर्योधन उसे साथ लेकर द्रोणाचार्य के समीप जा पहुँचा। और कहा - हे आचार्य! अर्जुन ने कल संध्याकाल होने से पूर्व जयद्रथ का वध करने की प्रतिज्ञा की है अब आप ही इस वीर के प्राणों के रक्षक हैं। यह सुनकर आचार्य ने कहा - हे वीरवर! तुम निश्चिन्त रहो। मेरे रहते तुम्हारा कोई अहित नहीं कर सकता। कल के युद्ध में मैं एसा व्यूह निर्माण करूँगा कि अर्जुन का वहाँ तक पहुँचना ही कठिन होगा।

द्रोणाचार्य से आश्वासन पाकर जयद्रथ निर्भय होकर विचरण करने लगा। इधर अर्जुन की इस प्रतिज्ञा को सुनकर भगवान् श्रीकृष्ण किञ्चित् मुस्कराते हुए

बोले - हे पार्थ! तुमने जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा बिना सोच समझे ही कर डाली है। तुम नहीं जानते हो कि उधर जयद्रथ को बचाने हेतु द्रोणाचार्य ने भी प्रतिज्ञा कर ली है। जयद्रथ कल के युद्ध में कमलव्यूह की कर्णिका में छः महारथियों से रक्षित रहेगा। उस समय उसे जीतना अत्यन्त दुष्कर होगा। तब अर्जुन ने कहा कि - हे माधव! मुझे विश्वास है कि आपकी कृपा से मेरी यह प्रतिज्ञा अवश्य ही पूर्ण होगी। भगवन्! इस समय आप जाकर सुभद्रा और उत्तरा को सान्त्वना प्रदान करें। अर्जुन की यह बात सुनकर भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन के शिबिर में पहुँचकर सुभद्रा से बोले - हे भगिनि! तुम और उत्तरा किञ्चित् भी शोक सन्ताप मत करो। क्योंकि, एक दिन तो सभी का मरण निश्चित है। अभिमन्यु ने तो वह गति प्राप्त की है जो बडे-बडे तपस्वियों को भी प्राप्त नहीं हो सकती। अत एव उसके लिए शोक करना अनुचित है। इसी समय वहाँ पर द्रौपदी आदि रानियाँ पहुँचकर विलाप करने लगीं। पुनः कृष्ण ने समझाते हुए कहा कि - हे सुभद्रे! अभिमन्यु के शत्रु को मारने की प्रतिज्ञा तुम्हारे पति ने कर ली है और कल सूर्यास्त तक अवश्य मारा जायेगा। इस प्रकार सभी को समझाकर अपने सारथि को बुलाकर कहा कि - के दारुक! कल मेरे रथ अच्छी तरह तैयार करना। क्यों कि जयद्रथ को मारने की चक्र, कौमोदकी गदा, शाङ्र्गधनुष, पाञ्चजन्य शंख आदि मेरे समस्त दिव्यास्त्रों के रखना मत भूलना।

जयद्रथ वध की बात सोचते - सोचते अर्जुन को निद्रा आ गई। उसी समय उन्होंने स्वप्न में देखा कि भगवान श्रीकृष्ण उनके समीप आकर कह रहे हैं हे अर्जुन! तुम इतने चिंतित क्यों हो रहे हो? तुम्हारी प्रतिज्ञा अवश्य पूर्ण होगी क्यों कि वह तुम्हारी प्रतिज्ञा न होकर मेरी प्रतिज्ञा है तुम अब मेरे साथ चलो। इतना कहकर श्रीकृष्ण अर्जुन को लेकर कैलासपर्वत जा पहुँचे। वहाँ
शंकरजी उनका स्वागत सत्कार करते हुए बोले - के देवाधिदेव! बताइये मेरे योग्य क्या सेवा है? तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा - हे आशुतोष! अर्जुन ने यह प्रतिज्ञा की है कि कल सूर्यस्त तक जयद्रथ का वध करेंगे। अतः आप अर्जुन को पाशुपतास्त्र देने की कृपा करें। शंकर जी ने कहा आप लोगों की अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यहाँ से समीप ही एक सरोवर पर मेरा धनुष तथा पाशुपतास्त्र रखा है। वहाँ जाकर आप उसे प्राप्त कर लें। वें दोनों उस सरोवर के समीप पहुँचे, किन्तु वहाँ उन्हें दो सर्प दिखाई पडे। तब अर्जुन ने शिवजी को प्रणाम कर शतरुद्रिय का विधीवत् पाठ किया, जिससे वे दोनों सर्प अस्त्रों में परिवर्तित हो गये। तब अर्जुन उन दिव्यास्त्रों को लेकर शिवजी के पास आये और उसे शिव जी को भेंट कर दिया। सभी के देखते ही देखते शिवजी की पसली से एक ब्रह्मचारी निकला और उसने वीरासन में बैठकर उस अमोघपाशुपतास्त्र की प्रयोग विधि बतला दी। फिर पाशुपतास्त्र को शिवजी ने अर्जुन को प्रदान कर दिया। फिर दोनों शंकर जी को प्रणाम करके लौट आये। स्वप्न के समाप्त होते ही अर्जुन नेत्र खुले। उन्होंने सम्मुख श्रीकृष्ण को देखकर उन्हें प्रणाम किया। बाद को उन दोनों ने उस दिन के युद्ध की रणनीति बनायी। अर्जुन ने रात्रि वाला

स्वप्न युधिष्ठिर को सुनाया उसे सुनकर युधिष्ठिरादि ने इस स्वप्न के फल को बहुत ही शुभ बताया। फिर सात्यकि के ऊपर धर्मराज की रक्षा का भार सैंप कर अर्जुन और श्रीकृष्ण रथारूढ हुए।

रात्रि के व्यतीत होने पर द्रोणाचार्य ने शकट व्यूह का निर्माण किया। उसकमल की कर्णिका में जयद्रथ को छः महारथियों के संरक्षण में रखा। व्यूहके द्वार पर स्वयं द्रोणाचार्य खडे हुए। यह व्यूह दस कोश तक विस्तृत था। उसके पीछे पद्मगर्भ व्यूह नामक अमोघ व्यूह था। उस पद्मगर्भ व्यूह में सूचीमुख नामक व्यूह का निर्माण किया गया था। उस सूचीमुख की कर्णिका में जयद्रथ छिपा था। तब पाण्डवों की ओर से शतानीक एवं धृष्टद्यम्न ने भी अपनी सेनाओं को व्यूहाकार खडी करके युद्ध की रणभेरी बजायी। फिर अर्जुन और श्रीकृष्ण ने भी अपना प्रलयकारी रूप धारण करते हुए देवदत्त एवं पाञ्चजन्य से शंखध्वनि की। अर्जुन का रथ त्वरित गति से शत्रु सेना की ओर निरन्तर बढ रहा था। उससमय अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों की वृष्टि से सम्पूर्ण गजसेना छिन्न भिन्न हो उठी। अपनी सेना को भयभीत होकर पलायित होता हुआ देखकर द्रोणाचार्य अर्जुन के सम्मुख आ गये और बोले - हे धनञ्जय! आप मुझे परास्त किये बिना आगे नहीं बढ सकते, न की जयद्रथ का वध कर सकते। अर्जुन बोले कि आप मेरे शत्रु नहीं प्रत्युत पूज्य गुरु हैं। मैं भी आपका शिष्य और पुत्र के समान हूँ इस प्रकार कहते हुए अर्जुन जयद्रथ के वध हेतु उत्सुक होकर अत्यन्त गति से कौरवों की सेना में प्रवेश करने लगे। अर्जुन इस प्रकार आगे बढते देखकर राजा श्रुतायुध अर्जुन के सम्मुख विशाल सेना लेकर आ गया, किन्तु अर्जुन ने देखते ही देखते उसके समस्त अस्त्रों को काट डाला।

श्रुतायुध, श्रुतायु आदि के वध से दुर्योधन भयभीत होकर विचार करने सोचकर वह एकाकी रथ से उतरकर आचार्य द्रोण के पास जाकर बोला - हे आचार्य! जब आपको अपने ही शिष्य अर्जुन पर ऐसी ही कृपा करनी थी तो मुझे पहले ही क्यों नहीं बताया? यह सुनकर आचार्य ने कहा कि अर्जुन के सारथी भगवान श्रीकृष्ण हैं। साथ ही उनके रथ के घोडे भी तेज और बलवान हैं और अर्जुन भी शस्त्रास्त्र विद्या में हमसे अग्रणी हैं। उसके घोडे थोडा सा ही
मार्ग बन जाने पर तेजी से आगे बढ जाते हैं और मेरे बहुत रोकने पर भी वे नहीं रुक पाते। फिर मैं ने युधिष्ठिर को पकडने की प्रतिज्ञा की है न कि अर्जुन को रोकने की। इसलिए अब मैं उन्हे पकडकर दिखलाऊँगा, क्योंकि वे सेना के सामने ही खडे हैं, लेकिन इसी समय तुम्हें अर्जुन को क्षण के लिए रोक लेना होगा। यह सुनते ही दुर्योधन कहने लगा कि आचार्य! अर्जुन बहुत बडा धनर्धर है, मैं उसके सम्मुख एक पल न ठहर सकता। तब आचार्य बोले-राजन्! तुम किञ्चित भयभीत न हो मैं तुम्हें शंकर का दिया हुआ अभेद्य कवच पहनाता हूँ। इसको भेदने की सामर्थ्य देव, दानव, राक्षस गन्धर्वादि किसी में नहीं है। द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को समझाकर तथा शंकर द्वारा प्रदत्त अभेद्य कवच पहनाकर अर्जुन के साथ युद्ध करने हेतु भेज दिया। जब अत्यन्त श्रमित घोडों को देखा तो भगवान

श्रीकृष्ण से अर्जुन ने कहा-भगवान्! हमारे घोडे अत्यन्त थक चुके हैं अब उन्हें किञ्चित् विश्राम ले लेने दीजिए। अभी जयद्रथ दूर है आप निश्चित होकर इन अश्वों को विश्राम कराइये। मैं अपने बाणों से शत्रु सेना को रोकूँगा। इतना कहते ही अर्जुन ने बाणों का एक घर बनाया। भगवान श्रीकृष्ण घोडों को खोलकर उस घर में विश्राम हेतु ले गये।

श्रीकृष्ण ने कहा - हे अर्जुन! घोडे तृष्ण से पीडित हैं इनके लिए जल का प्रबन्ध करो। इसी समय अर्जुन ने एक अलौकिक तीक्ष्ण बाण तरकश से निकालकर पृथ्वी को विदीर्ण कर एक सुन्दर जलाशय का निर्माण किया। घोडों ने जल पिया तथा पूर्ण स्वस्थ हो गये। फिर रथ में लगाकर तथा अर्जुन को बैठाकर भगवान ने तेजी से रथ हांक दिया। श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों निर्भयता पूर्वक आगे बढ रहे थे। जयद्रथ पर दृष्टि पडते ही श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों ने हर्षध्वनि की। इसी समय अभेद्य कवच पहने हुए दुर्योधन सम्मुख आ गया। अर्जुन ने तत्काल अपने तीक्ष्ण बाणों से दुर्योधन के हाथों की उंगलियाँ बींध दी। फिर सारथी सहित अश्वों का वध कर दिया। दुर्योधन इससे व्याकुल होकर युद्ध से पलायित हो गया। इधर भीम और अम्बुष का भीषण युद्ध चल रहा था किन्तु इस युद्ध में अलम्बुष ने भीमसेन को घायल कर दिया। इसी समय क्रोध से भरा हुआ भीमपुत्र घटोत्कच अलम्बुष के सम्मुख आ गया। फिर दोनों मायावी राक्षसों में बहुत देर तक युद्ध चलता रहा। अन्त में अलम्बुष ने घटोत्कच का रथ नष्ट कर दिया। इससे क्रोधित होकर घटोत्कच रथ से उछलकर अलंबुष पर अत्यन्त वेग पटक दिया। अलम्बुष का शरीर छिन्न भिन्न हो गया और वह मर गया। अलम्बुष के मरते ही कौरव की सेना में फुनः चीत्कार मच गया पाण्डव हर्षध्वनि करने लगे।

इधर प्रातःकाल से अर्जुन का कोई समाचार न प्राप्त होने से युधिष्ठिर चिंतित हुए। उन्होंने सात्यकि से अर्जुन का समाचार लाने के लिए कहा किन्तु सात्यकि ने कहा - धर्मराज! मुझे भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन ने आपकी रक्षार्थ यहाँ छोडा है, क्योंकि द्रोण आपको बन्दी बनाना चाहते हैं। फिर भी आपकी आज्ञा शिरोधार्य करके जा रहा हूँ किन्तु आप गुरु द्रोण से सावधान रहें। यह कहकर सात्यकि, थोडी सी सैन्य शक्ति साथ लेकर युद्ध क्षेत्र में प्रवेश किया। आगे बढने पर कृतवर्मा सात्यकि के सम्मुख आ गया, किन्तु वह सात्यकि की वीरता के सामने टिक न सका और उसकी मार खाकर पलायित हो गया। किन्तु इस से सात्यकि को अत्यन्त विलंब हो चुका था अर्जुन का कोई समाचार नहीं प्राप्त हो सका था। तब युधिष्ठिर ने
भीम को बुलाकर कहा - हे भ्राता भीम! प्रातः काल से ही अर्जुन का कोई समाचार नहीं मिल सका है। न जाने वह किस संकट में फंसा हो? मैंने इसका पता लगाने हेतु सात्यकि को भेजा था, किन्तु वह भी अभी तक वापस नहीं लौटा है। अब तुम जाकर अर्जुन की सहायता करो और सिंहनाद करके उसका कुशल क्षेम मुझ तक पहुँचाओ। युधिष्ठिर की व्याकुलता देख भीम ने अपनी गदा और

धनुषबाण लेकर युधिष्ठिर की रक्षा का भार धृष्टद्युम्न को सौंप कर शत्रुसेना पर सिंहवत् गर्जना करते हुए कूद पडे। महारथी भीम युद्ध करते हुए द्रोण के सम्मुख आ पहुँचे। द्रोण ने अपने बाणों से भीम का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। उस पर भीम ने रथ से उतरकर द्रोणाचार्य को रथ समेत बहुत दूर फेंक दिया। इसके पश्चात् उनके सम्मुख कर्ण आ गया परन्तु कर्ण को परास्त करके भीम अर्जुन के समीप जा पहुँचे। अब जयद्रथ ने अर्जुन भीम और सात्यकि तीनों महारथियों को एकत्रित देखा तो उसने समझ लिया कि अब उसकी मृत्यु निश्चित है।

फिर दुर्योधन इस स्थिति के देखकर भयभीत हो उठा और भागता हुआ आचार्य द्रोण के निकट पहुँचा और कहने लगा। हे गुरुदेव! हमारी सेना अनाथों की भाँति त्राहि त्राहि कर रही है तथा सात्यकि, भीम व अर्जुन जयद्रथ के समीप पहुँच चुके हैं। अब जयद्रथ की रक्षा करना आपका कर्तव्य है। दुर्योधन को व्यथित देखकर द्रोण बोले - हे दुर्योधन! इस समय हमारा कर्तव्य है कि किसी भी तरह हम जयद्रथ की रक्षा करें। इसलिए तुम शीघ्र ही वहां पहुँचो जहाँ वे तीनों योद्धा हैं और उनसे युद्ध करो आचार्य की बात सुनकर दुर्योधन ने समझ लिए जयद्रथ की रक्षा भार उन्हीं पर है इसलिए वह तत्काल ही अर्जुन के पास पहुँचा। इधर कर्ण भी एक बार भीम द्वारा पराहत होने पर भी पुनः भीम से युद्ध करने लगा। दुर्योधन ने कर्ण की रक्षा के लिए अपने भ्राता दुर्जय को भेजा। किन्तु भीम ने उसे तत्काल ही यमलोक भेज दिया और कर्ण के रथ का भग्न कर दिया। भीम का अद्‌भुत पराक्रम देखकर कर्ण घबरा गया और रथ में छिपकर किसी तरह भीम के वार को बचाया। इस पर भीम कर्ण के रथ पर चढ गये और कर्ण के रथ के नीचे खींचने लगे। कर्ण ने अपने तीक्ष्ण बाणों से भीम को मूर्च्छित कर दिया, किन्तु कुन्ती की बात ध्यान आने पर उसने भीम का वध नही किया। भीम सात्यकि के रथ पर आरूढ होकर अर्जुन के निकट आ गये। सात्यकि व भीम को अपने पास देखकर अर्जुन को युधिष्ठिर की चिन्ता होने लगी। युद्ध में भूरिश्रवा ने सात्यकि को पृथ्वी पर गिरा दिया और उसे तलवार से मारने को उद्यत हुआ इसी समय कृष्ण ने अर्जुन को संकेत किया। अर्जुन ने तत्काल ही एक बाण से भूरिश्रवा की तलवार वाली भुजा काँट डाली। यह देखकर सभी लोग अर्जुन की निन्दा करने लगे कि सात्यकि से युद्ध करते समय अर्जुन को उसकी भुजा नहीं काटनी चाहिए थी। भूरिश्रवा ने सात्यकि को छोडकर मरणपर्यन्त उपवास करने का संकल्प ले लिया। सात्यकि ने तलवार से भूरिश्रवा का सिर पृथक् कर दिया। यह देखकर कौरव सात्यकि के इस कार्य की निन्दा करने लगे।

तत्पश्चात् श्रीकृष्ण ने रथ को जयद्रथ की ओर बढाया। जटद्रथ व अर्जुन में घोर संग्राम होने लगा। जयद्रथ की ओर से छः और महारथी युद्ध करने आ गये। सूर्यास्त होने में बहुत ही अल्प समय अवशेष था इसलिए सभी कौरव पूर्णशक्ति से युद्ध में लगे हुए थे। इस समय
जयद्रथ की रक्षा अश्वत्थामा, वृषसेन, कृपाचार्य, शल्य, कर्ण आदि वीर कर रहे थे इस समय कृष्ण ने कहा कि अर्जुन इन महारथियों ने जयद्रथ को आवृत कर

रखा है। उन्हें परास्त किये बिना जयद्रथ को मारना कठिन है। सूर्यास्त भी होने वाला है। अतः अब एक ही उपाय है कि मैं अपनी माया से सूर्य को आच्छादिति कर देता हूँ। उस समय जयद्रथ समझेगा कि अब सूर्यास्त हो चुका है वह निर्भय होकर तुम्हारे समीप आ जायेगा। उस क्षण उसे मार देना। सूर्योदय पुनः हो जायेगा इसके अतिरिक्त जयद्रथ को मारने का अन्योपाय नहीं है। अर्जुन ने कहा आपकी जैसी इच्छा। श्रीकृष्ण ने योग माया से सूर्य को आवृत कर दिया। सर्वत्र अन्धकार हो गया। सूर्यास्त हुआ जानकर जयद्रथ प्रसन्न होकर आया और अर्जुन से बोला - सूर्यास्त हो चुका है तू अब मुझे छोड अपने मरने हेतु प्रबन्ध कर ले। कृष्ण ने अर्जुन को संकेत किया। पार्थ! सिन्धुराज अभी सूर्य की ओर देख रहा है अभी सूर्यस्त हुआ नहीं। तुम शीघ्र ही इसका वध कर दो। किन्तु इसका सिर पृथ्वी पर काटकर न गिरे, क्यों कि इसके पिता विश्वविख्यात वृद्धक्षत्र था। उसे यह आकाशवाणी सुनाई दी कि राजन्! आपका यह पुत्र कुल शील आदि गुणों से अन्य चन्द्र वंशियों के समान होगा किन्तु एक बार युद्ध में अन्य क्षत्रिय श्रेष्ठ के हाथों इसका सिर काट दिया जायेगा। यह सुनकर वृद्धक्षत्र ने कहा जो पुत्र के सिर को पृथ्वी पर काटकर गिरायेगा, उसके सिर के सौ टुकडे हो जायेंगे। यह कहकर वृद्धक्षत्र जयद्रथ को राज्य देकर तप हेतु वन में चला गया। इस समय समन्तपंचक क्षेत्र में बडी घोर तपस्या कर रहा है। इसलिए इसका सिर दिव्यास्त्र से काटकर वृद्धक्षत्र की गोद में गिरा दो। यह सुनकर अर्जुन ने तरकश से काल के समान एक प्रचण्ड बाण निकाला और उसे जयद्रथ पर छोड दिया। यह बाण जयद्रथ के सिर को ले जाकर वृद्धक्षत्र की गोद में गिराया। जब उसके पिता जप करके उठे तो उसका सिर पृथ्वी पर गिर गया तो उन्हीं के सिर सौ टुकडे हो गये। जयद्रथ के वध होने पर श्रीकृष्ण ने सारा अन्धकार हटा दिया। समस्त कौरव आँसू बहाने लगे।

तत्पश्चात श्रीकृष्ण अर्जुन, सात्यकि और भीम को लेकर युधिष्ठिर समीप आये। धर्मराज ने अर्जुन को कण्ठ से लगाकर कृष्ण की स्तुति की। संजय कहते हैं - हे राजन्! जयद्रथ की मृत्यु से कौरव सेना में शोक छा गया। दुर्योधन रोता हुआ द्रोण के पास आकर बोला - गुरुवर! आज अर्जुन ने हमारी सात अक्षौहिणी सेना नष्ट की और जयद्रथ का भी वध कर दिया। यदि आप चाहते तो जयद्रथ का वध न होता, वस्तुतः आप हमारी सहायता ही करना नहीं चाहते। दुर्योधन के अमर्ष पूर्ण वचनों को सुनकर द्रोण बोले हे दुर्योधन! तू सदैव व्यंग्यबाणों से मुझे व्यथित करता रहता है लेकिन तुझे यह ज्ञात नहीं कि अर्जुन को जीतने वाला इस त्रिलोक में कोई नहीं है। यह द्यूत क्रीडा नहीं है जो शकुनि द्वारा छल से पाशा फेंकवाकर अधर्म से पाण्डवों को जीत लोगे? यह युद्ध है। इस युद्ध में पाण्डवों को जीतना आसान नहीं है। यद्यपि अब मैं भी मृत्यु के सन्निकट हूँ फिर भी मरणासन्न तक अपना कर्तव्य को निभाता रहूँगा। यह कह कर चले गये। तब दुर्योधन ने कर्ण से कहा कि आचार्य हृदय से युद्ध नहीं कर रहे हैं इसीलिए अर्जुन को व्यूह में घुसने दिया। इसीलिए जयद्रथ मारा गया। कर्ण बोला - तुम

आचार्य पर मिथ्याभियोग लगा रहे हो? यह तो तुम्हारे पाप व अत्याचार एक साथ उदय होकर विनाश करा रहे हैं। जो होना है वह होकर रहेगा। ऐसा कहकर कर्ण भी युद्ध हेतु चला गया।

उस रात्रि में दोनों ओर से घोर युद्ध होने लगा। भीम विकराल रूप धारण करके शत्रु सेना का नाश कर रहे थे। अश्वत्थामा का सामना सात्यकि कर रहा था। अश्वत्थामा ने सात्यकि को घायल कर दिया। यह देख उसके सामने घटोत्कच आ गया। अश्वत्थामा ने घटोत्कच के एक ऐसा बाण मारा कि वह पृथ्वी पर गिर पडा। घटोत्कच को मरा हुआ समझकर पाण्डव सेना पलायन करने लगी।

इधर पाण्डवो ने द्रोण को मारने के उद्देश्य से चारों ओर से घेर लिया। अर्जुन दक्षिण से, भीम उत्तर से। दोनों को रोकने में द्रोण असमर्थ हो गये। यह देखकर दुर्योधन ने कर्ण से कहा हे वीर! तुम द्रोणाचार्य की रक्षा करो। कर्ण बोला - आप धैर्य धारण करें। मैं अर्जुन सहित सारी पाम्डव सेना को आज इन्द्र भी नष्ट होने से नही बचा सकते। अर्जुन के मरने पर अन्य चारों भाई स्वयं मर जायेंगे। तुम्हारा एक छत्र राज्य होगा, यह सुन कृपाचार्य अर्जुन से तू कितनी बार परास्त हुआ और भाग गया। यह सुन कर्ण रोष में बोला कृपाचार्य! आप सोच विचार का बात करें। इधर अश्वत्थामा को अपने मामा कृपाचार्य का अपमान सहन न हुआ और शीघ्र कर्ण को मारने के निमित्त झटपडा, परन्तु दुर्योधन ने दोनों को पृथक करके शान्त किया। युद्ध करते-करते अर्धरात्रि व्यतीति हो गई दोनों ओर से दीपक जलाकर युद्ध होने लगा। सञ्जय ने कहा - हे राजन्! जब घटोत्कच भीम और अर्जन के द्वारा कौरव सेना का विनाश होने लगा तब दुर्योधन कर्ण के पास जाकर बोला - देखो मेरी सेना का कैसे नाश हो रहा है उसके लिए तुम हीं कुछ कर सकते हो। यह सुन कर्ण शीघ्रता से द्रोण की रक्षार्थ समीप जा पहुँचा। अर्जुन का रथ द्रोण के सम्मुख कर दिया। कर्ण अवसर पाकर पाण्डवसेना को खाण्डव वन की भाँति भस्म करने लगा। पाण्डव सेना इससे भयभीत होकर पलायन करने लगी तब युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा - भ्राता तुम्हारे रहते हुए हमारी सेना पलायन कर रही है। कर्ण ने हमारे अनेक वीरों को यमलोक भेज दिया। इस समय कर्ण के वध का उपाय करो। कृष्ण ने कहा - अर्जुन! कर्ण को तुम या घटोत्कच दो ही वीर मार सकते हैं। फिर अर्जुन ने घटोत्कच को बुलाकर कहा - वत्स! इस रात्रि तुम कर्ण के साथ द्वैरथ युद्ध करो और सात्यकि की सहायता से कर्ण का वध करो। घटोत्कच बोला हे तात! मैं एकाकी ही कर्ण और उसकी सेना को वध हेतु सक्षम हूँ। ऐसा कह कर तुरन्त चल पडा। दुर्योधन को जब यह ज्ञात हुआ कि घटोत्कच कर्ण के वध के निमित्त जा रहा है तो उसने दुःशासन को कर्ण की सहायतार्थ भेजा। तब जटासुर का पुत्र द्वितीय अलम्बुष दुर्योधन से बोला - राजन्! इसके पिता भीम ने मेरे पिता का वध किया है अत एव आज मैं उसे मारकर प्रतिशोध लूँगा। इतना कहकर वह घटोत्कच से युद्ध करने लगा। अन्त में द्वितीय अलम्बुष को घटोत्कच ने मार डाला। और उसके सिर को काटकर दुर्योधन के रथ पर भेंट रूप में फेंक दिया। घटोत्कच और कर्ण

सम्मुख हो भयंकर संग्राम करने लगे। यद्यपि कर्ण वीर था किन्तु रात्रि होने से राक्षसी माया प्रबल थी वह अपनी पूर्णशक्ति रूपों में प्रकट होकर कर्ण को बाणों से बींध देता था। उसी समय उसके समीप अलायुध नामक राक्षस आया, घटोत्कच कर्ण को छोड अलायुध पर टूट पडा। उसने अलायुध से द्वन्द्व युद्ध करते हुए उसे मार कर दुर्योधन के रथ पर फेंक दिया। पुनः घटोत्कच व कर्ण में घोर संग्राम हो ने लगा। कर्ण अनेक प्रयासों से भी घटोत्कच को परास्त न कर सका प्रत्युत उसकी मार से स्वयं व्यथित हो उठा।
कौरवों ने कर्ण से कहा - इस राक्षस का शीघ्र ही वध कर दो। अन्यथा सारी कौरव सेना नष्ट हो जायेगी। कर्ण इसी समय घोर संकट में पड गया। उसने इन्द्रशक्ति को चला दिया जिसका नाम वैजयन्ती शक्ति था। कर्ण इस शक्ति को अर्जुन हेतु सुरक्षित रखना चाहता था। इस शक्ति के लगते ही घटोत्कच ने अपना शरीर और बढा दिया फिर विशाल चीत्कार करते हुए तथा कौरव सेना पर गिरते हुए प्राण त्याग दिये। उसके गिरने से एक अक्षौहिणी सेना दबकर मर गई। शक्ति घटोत्कच को मारकर पुनः इन्द्र के पास चली गई।

सञ्जय ने कहा - हे राजन्! घटोत्कच की मृत्यु से पाण्डव सेना में शोक बढ गया। किन्तु श्रीकृष्ण प्रसन्न होकर सिंहनाद करने लगे। यह देख अर्जुन बोले हे माधव! घटोत्कच की मृत्यु से आप इतने प्रसन्न क्यों हुए। कृष्ण बोले पार्थ! वीर घटोत्कच स्वयं मरकर तुम्हें अमर कर गया। क्यों कि कर्ण ने इन्द्र प्रदत्त वैजयन्ती शक्ति तुम्हें मारने हेतु रखी थी। उसी शक्ति के कारण मैं तुम्हे बार-बार कर्ण के सम्मुख जाने से रोकता था। पार्थ! तुम मेरी राजनीति नहीं जानते हो। यह कहकर अर्जुन के रथ को कर्ण के सम्मुख खडा कर दिया।

धृतराष्ट्र ने पूछा - सञ्जय! जब कर्ण ने अर्जुन को ही मारने हेतु उस अमोघ शक्ति को रखा था तो फिर उसने उसका प्रयोग पहले ही क्यों नहीं किया? सञ्जय बोले - राजन्! जब कर्ण युद्ध कर के आता था तो कौरव यही पूछते थे कि आज उस शक्ति का प्रयोग अर्जुन पर क्यों नहीं किया। इस पर वह कहता था कि पता नहीं। जब अर्जुन और श्रीकृष्ण मेरे सम्मुख आते हैं तो उस अमोघशक्ति का स्मरण ही नहीं रह जाता है। उसी शक्ति को निष्फल करने हेतु कृष्ण ने घटोत्कच को युद्ध हेतु भेजा था। तत्पश्चात् रात्रि होने कारण युद्ध विराम की घोषणा कर दोनों दल उसी अवस्था में सो गये। दुर्योधन द्रोणाचार्य से बोला - हे गुरो! शत्रु सेना सो रही है तथा असावधान है। ऐसे समय में आक्रमण कर सभी नष्ट कर दिया जाये। द्रोण बोले मैं वृद्ध हो गया हूँ किन्तु ऐसा अधर्म कदापि नहीं किया। फिर भी तुम्हारा आदेश है तो मैं करूँगा। दुर्योधन बोला सेना को दो भागों में करो। एक में मैं, कर्ण और दुःशासन, दूसरे में आप और मामा शकुनि रहेंगे। युद्ध हेतु निकल पडे। चन्द्रोदय होते ही रात्रि में ही युद्ध आरम्भ हो गया। जब युद्ध करते हुए प्रातः काल हुआ, तो सूर्य भागवान को प्रणामादि जपादि करके पुनः युद्ध प्रारम्भ हो गया।

द्रोण ने विराट, द्रुपद, व तीन पौत्रों का वध कर दिया। यह देख धृष्टद्युम्न

कुपित होकर पिता के वध का प्रतिशोध लेने हेतु द्रोण को मारने हेतु तत्पर हो गये। दुर्योधन के कहने पर द्रोण ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। सेना को संतापित देखकर अर्जुन ने उसे अपने ब्रह्मास्त्र से शान्त कर दिया। फिर द्रोण व अर्जुन का भीषण संग्राम होने लगा। कुन्ती पुत्रों को भयभीत देखकर श्रीकृष्ण ने कहा - आचार्य द्रोण पूर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी हैं जबतक इनके हाथ में धुनुष और बाण हैं तब तक इन्हें कोई परास्त नहीं कर सकता इन के हाथियार डाल देने पर ही इन का वध सम्भव है। अश्वत्थामा की मृत्यु से यह अपना शस्त्रास्त्र डाल देगें। इसलिए कोई इन्हें अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार दे सके तो उत्तम रहेगा। अस्त्र त्यागते ही धृष्टद्युम्न उन का सरलता से वध कर सकेंगे। भीम ने जाकर अपनी ही सेना के अश्वत्थामा नामक हाथी का वध करके सिंहनाद करते हुए कहा - अश्वत्थामा मारा गया द्रोण को भीम की बात पर विश्वास नहीं
हुआ वे युधिष्ठिर के पास पहुँचे। श्रीकृष्ण के समझाने से युधिष्ठिर ने द्रोण से उच्च स्वर में कहा 'अश्वत्थामा मर गया' फिर धीरे से कहा - किन्तु हाथी। सत्यवादी धर्मराज से यह बात सुनकर अस्त्र त्यागकर समाधिस्थ हो गये। जिसपर धृष्टद्युम्न ने उन की सिर काट लिया। अश्वत्थामा ने नारायणास्त्र को अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने चलाया है। द्रोणाचार्य के अन्यायपूर्ण वध के बारे में यह वार्तालाप चल ही रहा था कि उसी क्षण नारायणास्त्र पाण्डवों की सेना पर वज्र की भाँति आग्नि डालता हुआ आया। युधिष्ठिर ने देखा कि समस्त सेना भाग रही है। इसीसमय श्रीकृष्ण भगवान ने हाथ उठाकर ऊँचे स्वर में कहा - वीरों! तुम सब अपने अस्त्रों का त्याग करके रथ के नीचे छिप जाओ। यह नारायाणास्त्र निरस्त्रों को नहीं मारेगा, जो भी सामना करने को उद्यत होगा वह इसके द्वारा मारा जायेगा। श्रीकृष्ण की बात सुनकर नीचे उतरकर शस्त्रास्त्रों को त्याग दिया। इसी समय भीम ने उच्चस्वर में कहा - योद्धाओं! तुम अपने अस्त्रों को मत फेंकना। मैं अपने बाणों से अश्वत्थामा के इस अस्त्र का निवारण करूँगा। ऐसा कहते ही भीम अकेले ही अश्वत्थामा के सम्मुख गये तब अर्जुन और श्रीकृष्ण ने दौड कर भीम को रथ के नीचे खींच लिया। नारायणास्त्र शान्त हो गया। यह देखकर अश्वत्थामा को अत्यंत विस्मय हुआ।

दुर्योधन ने अश्वत्थामा से नारायणास्त्र के पुन स्सञ्चालन हेतु कहा, किन्तु उसने कहा यह एक ही बार प्रयोग किया जा सकता था। पुनः चलाने पर अब वह नारयणास्त्र मेरा ही वध कर देगा। अर्जुन ने अश्वत्थामा पर प्रचण्ड बाणों की वृष्टि आरम्भ कर दी। तब अश्वत्थामा ने आग्नेयास्त्र का प्रयोग किया जिस से पृथ्वी ज्वालमयी हो गयी। अर्जुन ने इसका प्रभाव रोकने हेतु तत्काल ही ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। इससे आग्नेयास्त्र पूरी तरह शान्त हो गया। श्रीकृष्ण व अर्जुन की कोई भी क्षति न देखकर अश्वत्थामा खिन्न होकर शस्त्रास्त्रों को फेंक दिया और रणभूमि से पलायन कर गया। तब वेदव्यास ने आकर उसे समझा कि वे दोनों नर-नारायण हैं। इसलिए कोई भी अस्त्र उनकी हानि नहीं कर सकते। इसके लिए तुम व्यर्थ चिंतित हो रहे हो। उस समय अश्वत्थामा ने मन ही मन

श्रीकृष्ण को प्राणाम किया और अपनी सेनाओं के साथ अपने शिबिर में वापस लौट गया।

।। द्रोणपर्व कथासार समाप्त ।।